International Journal of Applied Research 2021; 7(8): 176-178

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(8): 176-178
www.allresearchjournal.com
Received: 15-06-2021
Accepted: 17-07-2021

डॉ0 राजेश कुमार मिश्र
ग्राम–तुमौल, पोस्ट–पुतई,
जिला–दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 राजेश कुमार मिश्र
ग्राम–तुमौल, पोस्ट–पुतई,
जिला–दरभंगा, बिहार, भारत

आनन्द रामायण की विशिष्टता और रचना का उद्देश्य

डॉ0 राजेश कुमार मिश्र

प्रस्तावना:

वैष्णव, शाक्त, शैव सम्प्रदाय के संदर्भ में हम सभी जानते हैं कि भारत पर जब मुगल शासन कायम था तो भारत में पूर्व से उपार्जित धर्म, धार्मिकता, धर्मशास्त्र, कर्मकाण्ड, ज्ञानकाण्ड तथा भारत के प्रतिष्ठास्वरूप संस्कृत एवं संस्कृति पर तुषारापात हो रहा था। अपने ही घर में पराधीनता का भयादोहन था। धर्म और अधर्म का, सभ्य सामाजिक पर असामाजिकों का ताण्डव हो रहा था। ऐसे मे तत्कालीन बुद्धिजीवियों ने अवतारवाद पर जोर डाला, विशेषकर लीलापरक कथाओं एवं काव्यों के निर्माण पर। सर्वप्रथम कृष्णलीला के प्रचार–प्रसार पर अत्यधिक ध्यान दिया गया। उसके ठीक सौ वर्षो के बाद रामलीला पर ध्यान दिया गया।[1] इसीलिए जहाँ वाल्मीकि ने राम के सम्पूर्ण जीवन वृत्त को महाकाव्य के रूप में चित्रित किया था, वहीं बाद के कवियों ने न तो राम को चरित्रवान मानव के रूप में वर्णन कया और न अपने काव्य को महाकाव्य की पृष्ठभूमि में प्रस्तुत किया। वाल्मीकीय रामायण के पश्चात् बनी रामायणों पर पुराणों की शैली का प्रभाव विशेष रहा। सबों का एक ही उद्येश्य परिदर्शित होता है कि अपने भारतीय समाज को सही रास्ते पर चलने के लिए महान चरित्रों की शिक्षा दी जाय, अध्यात्म का बोध और धर्म के चमत्कार का सम्यक् ज्ञान कराया जाय। आनन्दरामायण की भी रचना इसी दृष्टि से की गई है।

शिव–पार्वती संवाद से आनन्दरामायण के सारकाण्ड की कथा आरंभ होती है और यात्राकाण्ड के तृतीय सर्ग में पार्वती की जिज्ञासा पर शिव रामदास और विष्णुदास का परिचय देते हैं।[2] तदुपरान्त रामदास और विष्णुदास का संवाद आरंभ हो जाता है।

आनन्दरामायण में कुछ ऐसे प्रसंग वर्णित हैं जो इसकी विशिष्टता को स्वयमेव प्रदर्शित करती है यथा–

1. सारकाण्ड मे दाशरथ–कौशल्या–विवाह की कथा जिसके अन्तर्गत रावण द्वारा कौशल्या का हरण होता है।[3] देव–दानव युद्ध में दशरथ से कैकेयी को वर की प्राप्ति,[4] श्रवण कुमार का वध,[5] दशरथ द्वारा पुत्रेष्टि और कैकेयी के पायस (हवि) का एक गृधी द्वारा चुराकर ले भागना तथा अंजनि पर्वत पर उसे फेंक देना,[6] एक नयी घटना का उद्घाटन हुआ है। इसके साथ ही सीता के स्वयंवर में रावण का उपस्थित होना,[7] अग्निजा सीता की जन्म–कथा,[8] वृन्दा–शाप तथा कलहा धर्मदत्त कैकेयी–दशरथ के रूप में अवतार की कथा,[9] सीताहरण के बाद सीता का रूप धारण कर उमा (पार्वती) का राम की परीक्षा लेना,[10] रावण का शिव से आत्मलिंग तथा पार्वती को पत्नी रूप में प्राप्त करने एवं दोनों को खो देने की कथा कही गयी है।[11] ऐरावत तथा मैरावण का राम–लक्ष्मण को पाताल ले जाना[12] और हनुमान के द्वारा उन दोनों की मुक्ति,[13] सती सुलोचना की कथा[14] तथा अपनी मुक्ति हेतु रावण के द्वारा सीता का हरण करने का भी उल्लेख हुआ है।[15]
2. यात्राकाण्ड में वाल्मीकि रामायण के निर्माण का वृत्तांत तथा वाल्मीकि द्वार शतकोटिश्लोक रामायण की रचना के प्रसंग को दर्शाया गया है। तदुपरान्त आनन्दरामायण की अधिकांश कथाएं नव–नवीन हैं। इस यात्राकाण्ड में भारत के चारों दिशाओ में राम की तीर्थयात्रा का वर्णन भी किया गया है।

   इस काण्ड की एक विशेषता यह भी पायी जाती है कि पार्वती के इस प्रश्न पर कि रामदास और विष्णुदास कौन है? तथा रामदास विष्णुदास को विस्तार से रामायण क्यों सुनाएगें? के उत्तर में श्रीशिव कहते हैं कि भारत के दण्डकारण्य में गोदावरी के मध्यप्रदेशीय अंधकक्षेत्र में नृसिंहमुनि के पुत्र रामदास और रामदास के शिष्य विष्णुदास होंगे। वे दोनो गुरु शिष्य सीता पति राम के अनन्यदास होने के कारण संसार मे प्रसिद्ध होंगे। वे ही रामदास गौतमी नदी के दक्षिणी तट पर तथा गया में पिता का श्राद्ध करके पृथ्वी के समस्त तीर्थो का भ्रमण करने के बाद गृहस्थाश्रम स्वीकार कर छात्रों को अनेक शास्त्रों का अध्ययन करायेंगे।[16]

यहीं पर एक महत्वपूर्ण बात कही गयी है जो वाल्मीकि रामायण से सम्बद्ध है और उसकी आलोचना भी इससे होती है कि विष्णुदास रामदास से पूछते हैं कि मैंने आपसे रामायण का सारकाण्ड तो सुन लिया, परन्तु उसमें मैंने कहीं भी जानकी और राम का कोई सुखद संवाद नहीं सुना।[17] इसके बाद राम–सीता के उज्जवल व सुखदायक चरित्र की कथा कहने लगते है।[18]

इससे यह स्पष्ट होता है कि आनन्द रामायणकार करूण रस प्रधान वाल्मीकि रामायण से कथा–सार ग्रहण करते हुए श्री आनन्ददायक श्रृंगार रस प्रधान रामकाव्य निर्माण करने का उद्देश्य निर्धारित कर लिया था।

3. यागकाण्ड में राम के द्वारा किये गये एक अश्वमेध का सविस्तार वर्णन किया गया है। तथा यज्ञांत में वशिष्ठ की इच्छा के अनुकूल राम सीता को दान कर देते हैं पुनः वापस भी हो जाती है।[19]
4. विलासकाण्ड का आरंभ ही होता है शंकरकृत रघुवीर–स्तव से।[20] तदुपरान्त सीता का नख–शिख वर्णन, सीता के अंलकार, जल–क्रीड़ा तथा सीता राम–दिनचर्या का श्रृंगारिक एवं धार्मिक वर्णन हुआ है।[21] एकपत्नीव्रती राम के इच्छानुसार अगले अवतार में बहुत सी स्त्रियों को प्राप्त करने का राम को भवगान व्यास तथा ब्राह्मणों द्वारा दिए गए आश्वासन,[22] राम का काम पीड़िता देवपत्नियों को द्वापरयुग में कृष्णावतार के समय गोपिकाएँ बनने का वचन देना,[23] तथा कृष्णावतार के समय सत्यभामा एवं कुब्जा बन जाने का गुणवती तथा पिंगला को राम द्वारा आश्वासन दिये जाने की कथा[24] तथा सीता सहित राम का कुरूक्षेत्र यात्रा का वर्णन किया गया है।[25]
5. जन्मकाण्ड में राम के द्वारा सीता के त्याग की कथा,[26] वाल्मीकि के आश्रम में कुश का जन्म तथा वाल्मीकि द्वारा लव की श्रृष्टि की कथा,[27] लव का राम की सेना से युद्ध करना,[28] पुनश्च राम–लक्ष्मण आदि के साथ लव–कुश का युद्ध[29] सीता की शपथ से पृथ्वी का प्रकट होना और राम से भयभीत होकर पृथ्वी द्वारा सीता को लौटा देना[30] तथा उर्मिला, माण्डवी एवं श्रुतिकीर्ति के दो–दो पुत्र उत्पन्न होने का वृत्तांत वर्णित है।[31]
6. विवाहकाण्ड में राम सहित सभी भाईयों के पुत्रों के भिन्न–भिन्न विवाहों का सप्रसंग वर्णन किया गया है।
7. राज्यकाण्ड में राम के राज्य शासन का विस्तारपूर्वक वृत्तांत प्रस्तुत किया गया है जिसमें अनेकों विजय यात्राओं तथा राजनीति का विशद वर्णन किया गया है। इसकी मुख्य विशेषता यह है कि इस पर कृष्ण–लीला का गहरा प्रभाव पड़ा है। साथ ही, राम द्वारा कामातुर स्त्रियों को कृष्णावतार में लालसा पूरी करने की वचन बदता वर्णित है।[32] कई स्थलों पर कृष्ण तथा राम के उपासकों के बीच विरोध प्रदर्शित है।[33] तथा रामावतार की श्रेष्ठता को प्रदर्शित की गयी है।[34]

   शतस्कंध रावण द्वारा राम की पराजय तथा सीता द्वारा उसके वध की कथा[35] और सीता द्वारा चण्डी का रूप धारण कर मूलकासुर वध का वृत्तांत वर्णित है।[36]

   इन दोनों कथाओं पर शाक्त–सम्प्रदाय का प्रभाव है जो परम ईश्वर से भी अधिक शक्ति की महत्ता को प्रदर्शित करता है। समन्वयात्मकता की दृष्टि से विचार किया जाय तो निश्चित रूप से शैव–शाक्त तथा वैष्णव मतों का यह एकीकरण आनन्दरामायण की विशिष्टता ही मानी जाएगी।[37] इसमें वाल्मीकि के पूर्व जन्मों का विस्तृत कथा भी कही गयी है।
8. मनोहरकाण्ड में रामकथा से संबंधित वस्तु का उल्लेख नहीं है। इसमें वर्ण्य–विषय रामोपासनाविधि, रामनाम माहात्म्य, चैत्र महिमा आदि है जो इस रामायण की संरचना को विशिष्ट बनाती है।
9. इस रामायण का अंतिम काण्ड पूर्णकाण्ड है जिसमें सोमवंशी राजाओं के आक्रमण तथा युद्ध और अनंतर उनसे संधि के वर्णन के अतिरिक्त उसके अभिषेक तथा राम आदि के वैकुंठारोहण की कथा कही गयी है।

इस रामायण की विशिष्टता दिखलाने के हेतु कुछ अंश उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करना चाहता हूँ जो रामकथा की समस्त घटनाओं का प्रतीकात्मक अर्थ प्रतिपादित कर देता है यथा–

1. मन की दुर्वृत्तियों का घात ही ताड़का वध है–
   ''मनोदुर्वृत्तिधातश्च ताड़िकाया वधोऽत्र सः''[38]
2. मनोवेगका भंजन ही जनकपुर में शिव–धनुष टूटना है–
   ''मनोवेगस्य यो भंगः सधनुर्थंग उच्यते।''[38]
3. जनकपुर में सीता के साथ मेरा (रामका) पाणिग्रहण होना ही माया का योग है– ''मायायोगस्ततस्तस्य मत्पाणिग्रहण स्मृतम्''[39]
4. बालि का वध करना ही अज्ञान का वध करना है–
   ''अविवेक वधः प्रोक्तश्चात्र बालिवधस्तथा''[40]
5. समुद्र में सेतुबंध ही अज्ञान से तरने का उपाय है–
   ''अज्ञानतरणोपायः सेतुबंधो महोदधौ'' ।[41]
6. कुम्भकर्ण का वध ही मद का तथा मेघनाद का वध मत्सर का निग्रह है
   ''मदस्य निग्रहस्तत्र कुंभकर्णवधस्त्वया।
   निग्रहो मत्सरस्यापि मेघनादवधोऽत्र सः।।[42]
7. रावण का वध करना ही अहंकार का नाश है–
   ''तत्राहंकारघातश्च रावणस्य वधस्त्वया''[43]
8. पुनः अयोध्या के लिए प्रयाण करना ही हृदयाकाश का गमन है–
   ''हृदयाकाशगमनमयोध्यागमनं पुनः''[44]

निष्कर्ष– इस प्रकार आनन्दरामायण में वर्णित विषयों तथा सभी कथाओं के वर्णन से उत्पन्न शंकाओं के निदान हेतु उप–कथाओं का निर्माण कर रचनाकार ने श्रदालु पाठकों तथा अन्वेषकों को प्रसन्न करने का यथासंभव प्रयास किया है। साथ ही सभी काव्यों में रामकाव्य तथा चरित्रों में सीता–राम के पावन चरित्र को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। कई स्थलों पर आनन्दरामायण की महत्ता और माहात्म्य प्रदर्शित कर रचनाकार ने आनन्दरामायण की रचना करने का अपना उद्येश्य भी अभिव्यंजित कर दिया है।

संदर्भ–

1. डॉ0 नागेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ0 89–97 ।
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास, वलदेव उपाध्याय सर्ग–3/1–71।
3. सारकाण्ड, सर्ग 1/32–69।
4. 000अत्रैव 1/84–85।
5. अत्रैव 1/91–92।
6. अत्रैव 1/102–107।
7. अत्रैव 3/65–81।
8. अत्रैव 3/188–274।
9. अत्रैव 4/81–170।
10. अत्रैव 7/141–148।
11. अत्रैव 9/33–54।
12. अत्रैव 11/73–78।
13. अत्रेव 11/128–130।
14. अत्रैव 11/205–218।
15. अत्रैव 13/122–139।
16. आ0रा0 यात्राकाण्ड सर्ग–1–2 ।
17. अत्रैव, 3/7–9।
18. अत्रैव 1

19. अत्रैव 3/13–80।
20. अत्रैव 8/62–77।
21. अत्रैव सर्ग–1 द्रष्टव्य।
22. अत्रैव सर्ग, 2–6
23. द्रष्टव्य– 7/9–28।
24. अत्रैव 7/32–50।
25. अत्रैव 8/20–58।
26. द्रष्टव्य सर्ग–9।
27. अत्रैव, सर्ग–3 सम्पूर्ण।
28. अत्रैव, सम्पूर्ण चतुर्थ सर्ग, कुशोज्येष्ठो तुजो लव–76।
29. अत्रैव, सर्ग 6/35–44।
30. देखें, अत्रैव, सर्ग–7।
31. अत्रैव सर्ग–8।
32. अत्रैव सर्ग 9/5–7।
33. शतनारी वर–प्रदान, सर्ग–4, द्विज–कन्या चतुष्टय–वरदान सर्ग–11, 16000 नारियों को वरदान–सर्ग–12, राम–दासी को राम का ताम्बूल–रस खाने के पुरस्कार स्वरुप राधा बन जाने का वरदान सर्ग–2 ।
34. अत्रैव सर्ग–3।
35. अत्रैव सर्ग–20।
36. अत्रैव सर्ग 4/82 आदि।
37. देखें, सर्ग– 4–5।
38. देखें, सर्ग– 14।
39. विलासकाण्ड, सर्ग–3, श्लो0 44।
40. अत्रैव, 3/44 1/2।
41. अत्रैव 3रु57।
42. अत्रैव 3/59।
43. अत्रैव 3/61।
44. शिवदत्त ज्ञानी, भारतीय संस्कृति, पृ0 72।